भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-2, अंक-10	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-15.00
वीरवार, 12 अक्तु.' 78	मानद सहसम्पादक: श्री महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 1.25

आज का युग.....

और.....

.....गुणातीत परम्परा

(मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के प्राकट्यदिन—शरदपूर्णिमा के अनुसंधान में)

आज का युग विज्ञानयुग-अवकाशयुग कहा जाता है और यह ठीक भी है क्योंकि हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि मानव चन्द्र पर गया है, कल मंगल पर भी जायेगा और इनसे अतिरिक्त या इनसे आनुषांगिक अन्यान्य सिद्धियां प्राप्त करेगा। दूसरी ओर सकलविध्वंसकारी प्रलयकारी अणु-परमाणु का विस्फोट भी हो रहा है और उनके दुष्परिणाम हमारे समक्ष है। जगत में जिनको विचार करने की शक्ति हैं वे सब जानते हैं कि वैर की एक ज्वाला-परमाणु का एक विस्फोट और सर्वनाश-प्रलय ! सब चिन्तित है। इसका कारण क्या? इसका उपाय क्या?

विज्ञान की यात्रा और अध्यात्म यात्रा-

कारण यह है कि मानवजाति की बुद्धि की वैज्ञानिक बुद्धि ने जितनी तेजी से यात्रा की है इतनी तेजी से आध्यात्मिक यात्रा नहीं हुई है। हजारों परमाणु बम्ब तैयार हों किन्तु मानव वैर मुक्त हो जाए, छोटे-छोटे वादों से परे हो जाए और मनुष्य जाति को जिन्दा रखने की एक साझी जिम्मेदारी है-इस तथ्य को समझ जाय तो विज्ञान की तेज यात्रा विनाशक और विध्वंसक मिट कर रचनात्मक हो जाएगी। अध्यात्म की पीठिका के बिना विज्ञान घातक है। अध्यात्म सह विज्ञान रचनात्मक है। मनुष्य पशुता छोड़ कर त्वरित दिव्यता ग्रहण नहीं करेंगे तो प्रलय निश्चित है।

आज के युग की मांग-

'वृत्तियों का विशुद्धीकरण'-यह है आज के युग की मांग। अतः चाहिए एक निश्चयात्मक दृष्टि, दिव्यता, प्रेम, निष्कामभाव, निर्मानिता, निर्भयता, सरलता, सहिष्णुता, समभाव, सत्य अहिंसा और ब्रह्मचर्य। अब समय ऐसा आ गया है कि ये गुण

केवल शब्दकोश-निर्जीव शब्द में नहीं रहने चाहिए किन्तु हमारे जीवन में उनको ओत प्रोत करना चाहिए।

तार्किक बुद्धि अन्ततोगत्वा सर्वनाश की ओर ही ले जाती है और दिव्यबुद्धि कल्याण की ओर। यह दिव्यबुद्धि कहीं बाहर से नहीं लानी है। यह है हमारे भीतर। किन्तु हम हैं अज्ञानवश, विषम वृत्तियों के आवरणवश; अतः उसका उदय नहीं हो रहा है।

उसका उदय करने के लिये भगवान श्री रामजन्द्र जी ने, श्री कृष्ण ने अवतार लिये। इस जगत के कल्याण के लिये कारूण्यमूर्ति बुद्ध आये, ईसा मसीह, जरथुस्त्र और मुहम्म्द आये, अहिंसा मूर्ति महावीर आये। श्री शंकराचार्य, श्री रामानुजाचार्य, श्री वल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य आदि आचार्यो ने कार्य किये। श्री क्फ्युशियस, श्री रामकृष्ण परमहंस, श्री अरविंद, श्री रमण महर्षि जैसे दिव्य ज्योतिर्धरों ने जीवन परिवर्तन के लिये कार्य किये, किन्तु प्रश्न यह है कि हम कहां हैं?

सदा सर्वथा आनन्द में जीवित रहने का मार्ग हमें प्राप्त हुआ है? नहीं। यह मार्ग चाहिए? सब कहेंगे-'निश्चित'। तो मार्ग है। मार्ग दिखलाया है पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण ने, मूल अक्षरमूर्ति स्वामिश्री गुणातीतानंदजी ने।

आदिकाल से मायाशबलित ब्रह्म के रूप में अनेकों ने अवतार कार्य किये हैं। किन्तु आज से करीब 200 साल पूर्व श्री सहजानंदस्वामी के साथ ही शुद्धचेतन्य ब्रह्म का प्रकटीकरण हुआ गुणातीतानंद स्वामी के रूप में। इन्होंने अपने आश्रितों के मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार रूपी कारण शरीर की वृत्तिओं का ध्वंस कर के आत्यंतिक कल्याण किया।

एक तथ्य हम सब जानते हैं कि कितना भी ज्ञान हो, वृत्ति का जब तक विशुद्धीकरण नहीं हुआ हो तब तक प्रवृत्तियाँ पाशविक बनने की सम्भावना है। रावण कम ज्ञानी नहीं था किन्तु वह सदाचार की ओर नहीं ढलता था क्योंकि उसकी वृत्तियाँ शुद्ध नहीं थी। यह ध्यान देना है कि हमारी प्रवृत्तियाँ वृत्तिओं का परिणाम है और मस्तिष्क परिवर्तन से नहीं, हृदय परिवर्तन से ही वृत्तियाँ और तज्जन्य प्रवृत्तियाँ बदली जा सकती है। और.....यह हृदयपरिवर्तन 'भक्ति' द्वारा ही सम्भव है।

साकार की उपासना—

'भक्ति' किसकी करनी चाहिए? साकार की। जो आकृतिबद्ध नहीं है उसकी भक्ति कैसे हो सकती है? तो, **जो निर्गुण और दिव्य चेतना ने मानवस्वरूप धारण किया हो उनकी ही भक्ति और उपासना हो सकती है और वह ही फलदायी बनती है। वैराट नारायण में से रामकृष्णादि सभी अवतार प्रकट हुए, किन्तु वैराट नारायण स्वयं धरातल पर मानवस्वरूप में प्रकट नहीं हुए है तो इनकी भक्ति-उपासना फलदायी नहीं बन सकती। श्री रामचन्द्रजी और श्री कृष्ण परमात्मा जैसे अवतार मानवस्वरूप में हुए, अतः रामनाम या कृष्णनाम का मंत्रोच्चार अर्चिमार्ग से उन्हें भूमण्डल में पहुँचता है** और आश्रित जीवात्मा कल्याण के मार्ग पर चल पड़ते हैं। इसी तरह आज से करीब 200 साल पूर्व अवतारों के अवतार परब्रह्ममूर्ति स्वामि श्री सहजानंदजी आये और साथ में गुणातीतानंदस्वामीजी के रूप में साकार ब्रह्म का अवतरण भी हुआ। यह **भक्त सहित भगवान की-ब्रह्म सहित परब्रह्म की साकार और प्रगट उपासना से-उनका मनन, निदिध्यासन, जपयज्ञ से वृत्तियाँ विशुद्ध हो जाती है, हृदयकमल पंखहीन हो जाती है और आश्रित का आखरी जन्म-आत्यंतिक कल्याण होता है; जैसे कि भगवान श्री कृष्ण के अंतर्धान हो जाने के बाद अगर शुकदेव जी ने इन्हें प्रकट किया था तो शुकदेवजी द्वारा सात दिनों में परीक्षित का मोहक्षय हुआ। हालांकि उस समय सनकादि जैसे अन्य भी दूसरे थे, किन्तु इन्हें वैराटनारायण की उपासना थी।**

अखण्ड गुणातीत परंपरा और क्लेश शमन का उपाय—

इसी तरह भगवान स्वामिनारायण ने अपना जीवनकार्य पूर्ण किया किन्तु उनकी कृपा समग्र मानवजाति पर इतनी थी कि इन्होंने ऐसे पात्र प्रगट किये कि जिनमें वह अखण्ड रहें। स्वामी गुणातीतानंदजी ऐसे प्रथम पात्र थे जिनमें महाराज अखण्ड बिराजते थे। परमात्मा को अखण्ड धारण करने वाले पात्र कैसे होते है, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है स्वामी गुणतीतानंदजी का समग्र जीवन। हम सब महाराज के पात्र हैं किन्तु अहंकार का ढ़क्कन है अतः बारिश बरस रही है किन्तु पात्र खाली है। स्वामी गुणातीतानंदजी ने यह ढक्कन तोड़ दिया। क्षर की सीमा तक अहंकार है। स्वामी गुणातीतीनंदजी अक्षर है। वे महाराज के असाधारण रंक सेवक थे। अतः महाराज इनमें अखण्ड रहे। उनके बाद मानवजाति के सदासर्वथा कल्याण के लिये अत्यंत कृपा से महाराज ने गुणातीत परम्परा अविच्छिन्न रखी जिनके कारण महाराज का वरद हस्त आज इस क्षण तक हमारे पर है, सतत रहने वाला है। इस परम्परा के आद्य है गुणातीत, अतः यह परम्परा-गुणातीत परम्परा-शुद्ध गुरुपरम्परा मूल अक्षरब्रह्म से प्रारंभित हुई परम्परा है। और गुणातीत रूपी पारस से पारस बने हुए गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज, गुरु हरि योगीजी महाराज के रूप में प्रचलित हुई। महाराज की इच्छा से और हमारे परम सौभाग्य से यह परम्परा प.पू. स्वामिश्री, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और प.पू. महन्त स्वामी जैसे भगवतस्वरूप संतों के रूप में आज भी विद्यमान है, प्रत्यक्ष है, हमारे समक्ष है। हम हमारे अज्ञानजन्य अहंकाररूपी लोह का ढक्कन खोल दे और इन भगवतस्वरूपों की ओर उन्मुख हो जाए इतना ही हमें करना है। शेष कार्य वे संभाल लेंगे। वे हमारी विनाशक वृत्तियों से हमें क्षण मात्र से मुक्त कर देंगे। यदि एक बार साहस करेंगे और अगर हम अपने आपको निवेदित कर देंगे तो यह निश्चित है कि सब क्लेश के शमन हो जाएंगे और प्रलय जो हमारे ऊपर छाने जा रहा है, सारी मानव जाति पर छाने जा रहा है उसको हमारे वश में कर सकेंगे। विज्ञान का पशु हमारी पर सवार नहीं हो सकेगा। हम हमारी इच्छानुसार जन-कल्याण के लिये उनका उपयोग कर सकेंगे। आह्वान (Challange) बहुत बड़ा है किन्तु भगवत्स्वरूप संत के साथ जुड़ जाने से यदि समग्र जगत का जीवन परिवर्तन होगा तो आह्वान कुछ नहीं है। हमारे पास पारस है जो महामृत्यु अर्थात् प्रलय का स्पर्श करता है तो वह जीवन में-परम जीवन में-मुक्तजीवन में-आनन्दमय जीवन में परिवर्तित हो जाता है। हमें निश्चय करना है कि क्या हमें जीवन चाहिए, सच्चा जीवन चाहिए, मुक्त जीवन चाहिए, आत्यंतिक कल्याण चाहिए, परम-निश्चल-सतत आनन्द चाहिए या मौत? यदि आनन्द चाहिए तो मूल अक्षर से प्रारंभित गुणातीत परम्परा में एक दिन सबको आना ही होगा।

शास्त्रीजी महाराज ने अनेक कष्ट सहन कर के हमें हमारे सनातन माता-पिता महाराज (पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान) एवं गुणातीतानंद स्वामीजी (मूलअक्षरमूर्ति) की पहचान करवाई। गुरुहरि योगीजी महाराज ने चैतन्य के विकास की यह अमृतमयी विरासत को सम्यक्ज्ञान और सम्यक्दर्शन के रूप में संधनिष्ठा के माध्यम से सबके लिये सरल, सहज और सुलभ बनाई। यह ही चैतन्य प्रवाह उपरिनिदर्शित विद्यमान भगवत्स्वरूप संतगण विविध स्तरों पे विविध समाज में प्रस्तुत कर रहे हैं और जीवों को लौकिक से अलौकिक और आध्यात्मिक भूमिका में प्रतिष्ठित कर रहे हैं और परम शान्ति, सुख और आनन्द समर्पित कर रहे हैं।

जीव की अल्पता—

हमारी अकेले की क्या शक्ति है? हम तो 5-10 मिनट एकाग्रचित्त से भजन भी नहीं कर सकते हैं। हम तो देश, काल-संसार के भंवर में डूबे जा रहे हैं। यदि कोई निर्मल साधु नौका बन कर हमें पार न उतारे, हमारे चैतन्यविकास की जिम्मेदारी न ले तो हम से कुछ भी नहीं होगा। निर्मल पुरुष से साथ योग नहीं होगा, उनकी प्रीति हम नहीं सम्पादन करेंगे तो निश्चत कष्ट है और यदि प्राप्त कर सकेंगे तो निश्चित परम सुख है ही। इन लोगों का (महापुरुषों का) यह दावा है। हमारे पास वह केवल निष्ठा मांगते है। उन्हें एक बार विश्वास हो जाय की यह व्यक्ति सचमुच मेरा है तो हमारा काम-मानवजाति की एक एक व्यक्ति का काम हो जायेगा।

गुणातीतानंदस्वामीजी के जीवन से दीक्षा–

ऐसी निष्ठा सम्पन्न करने के लिये हमें गुणातीतानंद स्वामीजी का जीवन उदाहरण रूप बनाना है। महाराज ही स्वामी का एक मात्र सहारा था, इनके एक के प्रति ही उनका प्रेम था, राग था। उनका और महाराज का परम रस में ऐक्य था। उनको किसी भी प्रकार के संकल्प-विकल्प नहीं थे। गुणातीतानंद स्वामीजी में धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति आदि अनंत कल्याणप्रद गुण पराकाष्ठा में थे किन्तु उन्होंने रंकभाव धारण किया। अत्यन्त नम्र प्रकृति धारण की। वे महाराज के सच्चे गुलाम बन गये। केवल महाराज की नहीं सामान्य जीवों की ब्रह्मदृष्टि से सेवा की, उनकी ओर विनय दिखाया, उनको माता की ममता देकर निभाया और महाराज में जुड़ कर अनेकों का कल्याण किया। जड़ को चेतन किया। असुरों के हाथ में जपमाला दे दी। गरीबों के मित्र बने और संसार में माधुर्य फैलाया। समाज के निम्न स्तर के लोगों के वह सच्चे सुधारक बने-आत्मपिता भी बने किन्तु अपनी ब्राह्मीस्थिति का इशारा भी नहीं दिया। किन्तु महाराज ने स्वयं गुणातीतानंद स्वामीजी का परिचय करवाया।

एक बार महाराज ने सद् मुक्तानंदस्वामी को पूछा था, 'इस साधु को पहचानते हो?' मुक्तानंद स्वामी ने उत्तर दिया था, 'हां, साधु अच्छे है, प्रगति कर रहे हैं।' महाराज ने प्रत्युत्तर दिया था, 'आप समझते है ऐसे साधु वह नहीं हैं।'.....और इसके बाद महाराज ने गुणातीतानंद स्वामीजी की अगाध अपरम्पार महिमा कही। तब मुक्तानंद स्वामी को सानन्दाश्चर्य हुआ। इसके पूर्व मुक्तानंद स्वामी मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी को अपने पत्तल में से प्रसादी देते थे किन्तु यह महिमा जब जानी तब इन्होंने गुणातीतानंदस्वामी जी को अपनी प्रसादी देने की मना कर दी और कहा, 'आज तक उलटी गंगा चली, अब सीधी चलेगी; अब प्रसादी आपको नहीं मिलेगी किन्तु मैं आपकी प्रसादी लूंगा।' यूं कह कर स्वामीजी के खूब मना करने पर भी मुक्तानंदस्वामी ने स्वामी के पत्तल में से प्रसादी ली।

एक दिन महाराज ने कहा, 'जैसे संडुसी में सांप पकड़े जाते हैं ठीक उसी प्रकार मेरी मूर्ति पकड़ रखी है इस साधु ने।' महाराज के यह कहने का तात्पर्य नहीं समझकर एक और साधु जो यह समझा था कि गुणातीतानंदस्वामी महाराज को कष्ट दे रहे है उसने कहा, 'बेटी का बाप महाराज को क्यों दुःख देता है। गुणातीतानंदस्वामी ने यह वाक्य सुना। किसी भी प्रकार का प्रतिवाद नहीं किया। वास्तव में उस समय गुणी गुणातीतानंदस्वामी का दर्शन अलौकिक ही था ! किन्तु जब महाराज ने स्वयं उनका महिमागान किया तब कई ने उनको पहचाना। तथापि गुणातीतानंदस्वामीजी को कहना पड़ा, 'सारे वडताल प्रदेश में मुझे पहचाना केवल एक रघुवीरजी महाराज ने !'

इस प्रकार स्वामी का जीवन देखते हुए स्पष्ट होता है कि उस समय भी अज्ञानी जीव मनुष्यरूप में विचरण करने वाले स्वरूपों को नहीं पहचानते थे और आज भी हमारे समक्ष ऐसे स्वरूप है किन्तु हमें इनकी पहचान नहीं है। यदि पहचान हो जाय, निष्ठा हो जाय, समर्पण हो जाय तो परम आनन्द हमारे जीवन में भी आ जायेगा, एक एक के जीवन में आ जायेगा, सारी मानवजाति के जीवन में आ जायेगा। जगत जो आज उन्मूलित उध्वस्त है और मृत्यु की परम विभीषिका की छाया में है वहां से उठ कर परमानंदमय बन जायेगा।

असाधारण करुणा और हम—

धन्य है वे अक्षरपुरुषोत्तम जिन्होंने मानव जाति के प्रति असाधारण करुणा होने के कारण ब्रह्मस्वरूप संतों की परम्परा-अक्षुण्ण परम्परा जीवों के कल्याण के लिये सतत प्रवाहित रखी है। वे मनुष्यरूप में हमारे साथ बैठते हैं, उठते हैं, खाते हैं, पीते हैं, हमारे जैसा ही व्यवहार करते हैं हमें अपनाने के लिए। किन्तु हम बदनसीब है कि पास में ही रहे पारस को पहचानते नहीं है, अपनाते नहीं है उनके मय होते नहीं है। दिल खोल दो और मनके शुद्धभाव से निर्दोष भाव से उनमें जुड़ जाओ, फिर देख लो कि वे हमारे जीवन में अपनी लीला विस्तार करके उनकी रीति, नीति और स्थिति का ख्याल हमें देते है या नहीं, सर्व प्रकार से हमारा समाधान करके हमें उनके जैसे बनाते है या नहीं, हमारे जीवन को समृद्ध, समक्र दर्शनयुक्त, शक्तिशील, वैभवपूर्ण और मुक्त बनातें है या नहीं। यह ही है एक रास्ता मुक्ति का, परमानन्द का, मृत्यु के भय का-प्रलय के भय का विनाश का, विज्ञान ने जो हमें आह्वान दिया है इसका प्रबल प्रत्युत्तर का !

सान्निध्य और पहचान में अन्तर—

जीवात्मा अनादि से रागबद्ध है। वह संसार में रहे तब भी बद्ध हो जाये और सत्संग की सेवा करता है तब भी अहंकार शून्य नहीं होने के कारण वहां भी महोब्बत, राग इत्यादि दूषण से वद्ध रहता है। सत्संगी होते हुए भी वह अपनी चेतना को गुणातीत परम्परा के परम चैतन्य प्रवाह में निमज्जित नहीं होने देता है। वहां भी वह अपनी अलग सत्ता में जीता है। परिणामस्वरूप महाराज और मूल अक्षर का प्रत्यक्ष सान्निध्य हो तब भी उसकी सम्यक् पहचाह नहीं होती है। **सान्निध्य में होना और पहचान में रहना-इन दोनों में बड़ा भारी अंतर है।** गुणातीतानंद स्वामीजी ने कहा है—

'कुछ एक मुक्त खेती और बाग बगीचे का कार्य करें ऐसे होते हैं, कुछ एक गौशाला, धर्मशाला या मंजिल का निर्माण करने वाले होते हैं। कुछ एक मंजिल आदि की प्रवृत्ति करने वाले होते हैं। किन्तु उपासना और ज्ञान के प्रवर्तन कराने वाले कम ही होते हैं। अर्थात् सच्चे साधु बनकर, सच्चे साधु कैसे बना जाता हैं इसकी कला हस्तगत कर सनातन दिव्य तत्त्वों की अभिव्यक्ति करने वाले अधिक नहीं होते हैं' यह कला क्या है? इसकी नींव में है अहंकारविध्वंस। केवल परमात्मा का होना, परमात्मा की प्रसन्नता की प्रसन्नता के लिये जीना, अपने में परमात्मा को अखण्ड धारण करना यह है वह कला। परमात्मा की इच्छानुसार प्रवृत्ति-निवृत्ति करने वाले विरल ही होते हैं। यह कैसे हो सकता है? पहले तो जैसा कि आगे कहा-अहंकार-विध्वंस, बाद में भगवत्स्वरूप संत का परिचय, बाद में उनमें श्रद्धा, बाद में उनकी सच्ची पारमार्थिक पहचान, बाद में समर्पण, बाद में अपने व्यक्तित्व का विसर्जन अर्थात् उनकी ही इच्छानुसार वृत्ति-प्रवृत्ति या निवृत्ति और बाद में ऐक्य। बालमंदिर का बालक धीरे-धीरे एक एक श्रेणी के बाद दूसरी श्रेणी में जैसे आगे बढ़ता है और रिसर्च स्टुडेन्ट होता है इसी प्रकार उपर्युक्त सोपान मार्ग का आश्रय से जीव परम गति को प्राप्त करता है।

शरदपूर्णिमा के दिन हमारी प्रार्थना-

और यहां है शरदपूर्णिमा के दिन जिनकी जन्म-जयंति है वे गुणातीतानंदस्वामी की गुणातीत चैतन्य प्रवाह को विकसित करने की परम्परा। इस परम्पराका आश्रय लेने से प्रथम प्राप्ति यह होगी की भूतकाल के हमारे सब पापों का प्रलय हो जाता है। महाराज के होने से महाराज का अभय वरद हस्त कार्य करना प्रारम्भ कर देता है। तो, भूतकाल के मूल्यांकन, विविध दृष्टियां, दृश्य सब विलीन करके ऐसे भगवत्स्वरूप संतों के प्रति सद्भावना में विहार प्रारम्भ करके प.पू. स्वामिश्री, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. महंत स्वामीजी के स्थूल व्यक्तित्व के पीछे अमर गुणातीत भावना में सहजानंदस्वामी की जो परम चेतना ही कार्य कर रही है उसे पहचानें, उसका अनुभव करें और आत्मसात् करें। यह होगा हमारा शरदोत्सव, यह होगी गुरु गुणातीत के प्राकट्य के दिन हमारी श्रद्धाञ्जलि ! सनातन स्वरूपों हमें अपना ले, अपना कर दें यह ही है हमारी इनके प्रति प्रार्थना क्योंकि व्यक्तिनाश या जगतनाश, विज्ञान का आह्वान या वृत्तियों का आह्वान से जीव और जगत बच सके और एक परमानन्दमयी सृष्टि में सारा संसार विहार कर सके।

If you merely use reason to judge a Saint, it produces only doubts in your mind and you can never accept even a genuine Saint as your Guru.

-Mother Krishnabai

The Divine or Supramental Consciousness

The eternal tattwa known as Atman or Brahman has the divine consciousness with three attributes-sat, chitt and ananda or bliss. But this eternal Brahman has two distinctive aspects Saguna & Nirguna and as an entity it transcends both the aspects. i.e. Mul Akshar - the mul adhara of all universes is the Akshar Brahman Gunatitanand Swami. Religious scriptures described only one aspect of Sacchidanand Brahman and therefore there have been partial visions, principtes and realisations. In all religions therefore there are different sorts or conficts and chaos of principles, methods and means of realisation.

In fact or realistically every true religion should always lead us-the human beings towards enlightenment and higher and higher consciousness, but in all religions normally the immediate devotees don't imbibe the true doctrine or knowledge of the Master and try to institutionalise the knowledge of eternal Brahman. There has been therefore intenal fights, jealousy and conflicts amongst one's own fold. This has now to be transcended into the Divine Consciousness. Here the vision being total and comprehensive, there can't be conflicts and chaous but harmony, equibalance and the natural atmosphere for the development of divine qualities in

all. If this is not achieved, Gunatitanand Swami says, 'it is not a fault of sadhakas or devotees but of a Guru'. So, our Lord said One should surrender God or supremely realised saint only and not to the advisors or preachers of the eternal Brahman.' The true religion will be based on real spiritualism where peace, harmony, equality, humbleness and all other divine qualities will be developed and the working will be based on love, charity and compassion. There will always be respct and love for each other's principles and doctrines where truth is manifested.

The most fortunate part of Lord Swaminarayan is His gift of Gunatit Bhavana and the maintainance of Continuous spiritual heirachy. We have therefore in Aksnar-Prurshottam doctrine, as prpounded in Gita Adhyaya 15-verses 16&17*, the continuity of real Spiritual Masters or Realised Saints through whom one can authentically develop divine qualities, enter into Supramental Consciousness and have the mastery over nature. Here is a realisation through the grace of a Master, if one can sincerely surrender and follow the instruction of a spiritual Master. We have therefore always a New-Year. Everyday is a new life full of enthusiasm and power under the grace of a Spiritual Master. The only lacking point is the creative faith, intense aspiration and surrender !

To day i.e. Sharadpurnima is the day of entry into eternal life or Supramental consciousness because Gunatitanand Swami-an eternal Akshar Brahman manifested in Divine form on this day. If we could have that oneness and that transcendental unity with our Gurudeo, then we can have eternal life here and also hereafter.

The New-Year's message therefore could always be of the comprehensive divine vision for leading the life under the guru's guidance in the right direction. We have therefore the Tantric centres for five categories of Satsanga for self realisation as follows:

(A) In the first category there is a principle of intense aspiration with indomitable faith in surrendering the master.

(B) There is an association here with real saints. Along with devotion towards Lord there is a Raj Yoga with saints. Here the baseless consciousness goes off and witnessing consciousness develops. One transcends the duality and keeps the mind in equibalance in all circumstances.

(C) Gradually in assocation with saints and while serving them one practises effortless meditation and develops the powers of inner instruments-mind, chitt, pran, intelligence and ego-resulting into choiceless consciousness and even one lives in this world carrying out all activities under this choiceless awareness.

(D) Thence, one has self realisation the enlightenment and the divine know ledge of God's working in this world. One shares with fellow satsangees and develops qualities of equality, humbleness, friendliness etc. This is the Kingdom of heaven here and within our heart. This is a real Akshardham where there is

---

* द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चोक्षर एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते।।
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य विभर्त्यव्ययः ईश्वरः।।

continuous mental peace, harmony and at the sametime mastery and perfection over the crude nature.

(e) In the fifth and final category one has to attain the transcendental unity with Akshar-Brahman or Satpurush where he becomes God-like or Bramaswaroopa and works according to God's plan for all the people. His working is like a sun without any desire or expectation. This is the eternal life based on Supramental consciousness. This is known as 'Jnan samadhi' where all actions and movements are inspired by God or Almighty poser. One attains Brahmisthiti for imparting the same knowledge of God to all the aspirants and truth-seekers.

We have thus, everyday a New-Year in such centres and there is always thanks giving and celebration for God's grace. Let us therefore glorify His name and spread his message of Love, compassion and gifts or boon. There is no sense of describing the truths but only in living it. Let us make that divine sankalpa to live from today totally in the presence of God's guidance or Gurudeo's inspiration. We may also prostrate to Pujya Yogiji Maharaj for putting us in contact of spiritual Masters like Pujya Papaji & Pujya Swamiji through whom such divine life is possible here. Mere a thought or desire will not do; so let us have that determination and will to enter into the Divine consciousness by the grace of spiritual master.

This is open to all as it is a love-gift by Lord Swaminarayan. This Gunatitanand Swami-Akshar Brahman is the eternal divine entity dwelling in all and this sort of understanding and realisation will open the inner door for such entry into this divine fellowship. Come, came dear brothers-for this celebration of Sharadpurnima.

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	18.10.78	बुधवार	अ.म.मु. जागास्वामी का प्राकट्यदिन
2.	दि.	27.10.78	शुक्रवार	रमा एकादशी, व्रत
3.	दि.	29.10.78	रविवार	धनत्रयोदशी
4.	दि.	30.10.78	सोमवार	कालीचौदश
5.	दि.	31.10.78	मंगलवार	दीपावली, शारदापूजन
6.	दि.	1.11.78	बुधवार	नूतन वर्ष संवत 2035, अन्नकूटोत्सव
7.	दि.	2.11.78	बृहस्पतिवार	भैयादूज
8.	दि.	5.11.78	रविवार	लाभपंचमी
9.	दि.	9.11.78	बृहस्पतिवार	नवमी, श्री स्वामिनारायण जयंती
10.	दि.	11.11.78	शनिवार	प्रबोधिनी एकादशी, निर्जला व्रत, तुलसी विवाह

साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदास जी द्वारा योगी डिवाईन सोसाईटी,
ए-13, अशोक विहार-III, दिल्ली-1152 फोनः 518838
मुद्रण स्थानः ठक्कर प्रिंटिंग प्रेस, 2588, बस्ती पंजाबियान, सब्जी मण्डी, दिल्ली-1177